

(II) 1704. — 2) *Hergang, die Art und Weise, wie Etwas vor sich geht, — geschieht*: लोकपर्यायवृत्तान्तं प्राज्ञो ज्ञानाति नेतरः Spr. 1424. रमणीयः किल दिनावसानवृत्तात् राजविष्मनः Vikr. 37, 10. = प्रकार AK. 3, 4, 14, 66. H. an. (wo प्रकार wohl nur Druckfehler für प्रकार ist). = प्रमेद Mnd. = भाव Viçva im ÇKDra. Ausserdem noch folgende Bedd. bei den Lexicographen: कार्त्तव्य AK. H. an. Mnd. प्रकार AK. H. an. प्रक्रिया und प्रस्ताव Mnd. अवसर und एकांत(वाचक) Viçva im ÇKDra. सद्गताः Hir. 78, 3 fehlerhaft für सद्गताश्च भूताः, wie die v. l. hat. — Vgl. प्रतिवृत्तान्तम् (der Erzählung gemäss, wie berichtet wird auch Rāga-Tar. 1, 189), प्रावृत्तान्त, यथा, लोक.

वृत्ति (von वर्त्) f. 1) das Rollen (von Thränen): स्तम्भितबाष्पं Çāk. 81, 3. उपरुद्धवृत्तिं बाष्पम् 90; vgl. अश्रूणि वर्तय् Thränen vergiessen unter वर्त् caus. 1). — 2) Art und Weise zu sein, — zu thun, — zu leben, Verfahren, Benehmen: आदितामि° Lāṭj. 10, 18, 11. त्रैविध्यं 8, 6, 29. वैश्यं Çāk. Grd. 4, 11. एषोदिता गृहस्थस्य वृत्तिर्विप्रस्य M. 4, 259. प्रबलतमसामेवंप्रायाः श्रेष्ठेषु हि वृत्तयः Çāk. 183. Rāga-Tar. 6, 327. वशिनां हि परपरिग्रहसंश्लेषपराश्रुषी वृत्तिः Spr. (II) 1806. सरितामिव नारीणां वृत्तिर्निम्नानुसारिणी (I) 2153. 2887. 5369. किं दत्तजीविकापि त्वमीदृशी वृत्तिमाश्रिता Rāga-Tar. 6, 22. प्रमदाध्युषितां वृत्तिं सीता कञ्चन वर्तते R. 3, 1, 7. तस्यैव वर्तमानस्य पूर्वेषां वृत्तिमन्वरुम् Bhāg. P. 4, 16, 18. का वृत्तिं वर्तयत्यसौ R. 7, 88, 3. तां वृत्तिमनुवर्तस्व 4, 31, 7. व्योबुद्धार्थवाग्वेष-श्रुताभिजनकर्मणाम् । आचरेत्सदृशी वृत्तिमन्निष्कामशठां तथा ॥ Jāṇ. 1, 123. शिष्यवृत्तिं समापन्नाः MBh. 13, 40. इन्द्रस्तपोः स्वेच्छावृत्तिं न सहते Çuk. in LA. (III) 33, 8. वर्तते याम्यया वृत्त्या M. 8, 173. R. 2, 109, 8. कया वृत्त्या वर्तितं ते परं वयः Bhāg. P. 4, 6, 3. पूर्वाश्रयिर्वृत्त्या R. 2, 23, 27. नागरिकवृत्त्या संज्ञापयिनाम् Çāk. 60, 2. प्रच्छन्नवृत्त्या Çuk. in LA. (III) 34, 10. मध्यां वृत्तिं समाश्रयेत् Spr. 2252. व्यपनयतु स वस्तामसीं वृत्तिमीशः Mālav. 1. आसुरीं वृत्तिमाश्रित्य Bhāg. P. 4, 26, 5. आश्रयेद्वैतसीं वृत्तिं न भोजनीं कथं च न Spr. 3175. Kathās. 3, 6. सैही वृत्तिमुपाश्रितः Spr. 2737. Verfahren —, Benehmen gegen Jmd; mit loc.: विद्यागुरुष्वेतेदेव नित्या वृत्तिः M. 2, 206. रिपौ Spr. (II) 206. Ragh. 10, 30 (pl.). Mālav. 9, 2. पितुर्भगिन्यां मातृवद्वृत्तिमातिष्ठत् M. 2, 133. गुरोर्गुरौ संनिहिते गुरुवद्वृत्तिमाचरेत् 205. 247. श्रेयसु गुरुवद्वृत्तिं नित्यमेव समाचरेत् 207. समा वृत्तिमवर्तत तपोः MBh. 13, 9. R. 2, 44, 5. 58, 17. fg. 73, 8. 104, 19 (112, 23 Gorr.). R. Gorr. 2, 75, 25. 3, 1, 10. 4, 17, 52. कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नी-जने Çāk. 93. am Ende eines adj. comp.: तद्विपरीत° Ragh. 2, 53. परा-धीन° Megh. 8. आश्रमविरुद्ध° Çāk. 177. मेध्यविविक्त° Bhāg. P. 3, 1, 19. नास्तिक° M. 3, 150. वृत्तल° 164. बक° 4, 30. ज्येष्ठ°, अज्येष्ठ° 9, 110. मुनि° Ragh. 1, 8. पतंग° Spr. 1930. वेतस°, भुजंग° 3176. नेमि° Ragh. 1, 17. — 3) ein gutes, achtungsvolles, liebevolles Benehmen, ein Gefühl der Achtung und Liebe für Jmd (vgl. गुरोर्गुरीयसी वृत्तिर्या च शिष्यस्य MBh. 13, 5114); die Ergänzung im gen. oder im comp. vorangehend: पितृ°, मातृ° MBh. 12, 3996. गुरोः 3997. गुरु° 15, 11. R. 2, 30, 36. 90, 20. स कौटव्यः कुशली तात भीष्मो यथापूर्वं वृत्तिरस्त्यत्र कञ्चित् MBh. 5, 692. वृत्तिः = अस्मासु स्नेहः Nilak. वृत्ति v. l. für वृत्त guter Wandel Spr. (II) 71. — 4) allgemeiner Gebrauch, Regel Rv. Prāt. 4, 12. AV. Prāt. 1, 8. — 5) Art und Weise des Verhaltens; Wesen, Natur, Art: संध्यन्तराणि संस्पृष्टवर्णान्येकवर्णवद्वृत्तिः AV. Prāt. 1, 40. आन्तर्येण वृत्तिः 95. परोक्षगु-

णवृत्तयः Spr. (II) 1366. कुसुमस्तवकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः । मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य विशीर्यति वने ऽथ वा ॥ 1843. am Ende eines adj. comp.: भोगा भङ्गवृत्तयः (I) 2071. गुरु°, लघु° Rv. Prāt. 18, 38. — 6) Zustand: सात्विकी, राजसी, तामसी Tattvas. 19. fg. — 7) das Sichbefinden —, Vor- kommen —, Erscheinen in, an: अथ धर्मस्य कामादपक्रातस्य कुत्र वृत्तिः wo befindet er sich? Prab. 64, 4. am Ende eines adj. comp.: नृभिर्गोधने- श्चापि वनवृत्तिभिः Hariv. 4283. उन्मार्गा° Kathās. 22, 239. समीप° (ed. Bomb. °वर्तिन्) Pañāt. 67, 25. गुणकर्ममात्रवृत्ति — असमवायकेतुत्वम् Bhāṣhāp. 22. 26. 164. नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषाः Tarkas. 4. पृथिवीजल- तेजो (द्रव) 13. 34. परोक्ष° so v. a. abwesend Spr. (II) 1366. — 8) das Vorkommen, Dasein: अनुष्ठाम् Lāṭj. 8, 1, 13. 5, 15. गुणलोपाधिना सक- लद्रव्यवृत्तिः Sarvadarśanas. 103, 5. अनन्यथासिद्धकार्यनियतपूर्ववृत्ति कार- णम् Tarkas. 21. प्रतिकृततमो (अधिकार) Vikr. 20. व्रतापदेशाद्विक्त- गर्व (वपुस्) 53. — 9) das Obliegen, Hingegebenheit (die Ergänzung im loc. oder im comp. vorangehend) P. 4, 3, 38. Vop. 23, 30. तत्रियस्य ज्ञेये वृत्तिः समाहिता MBh. 2, 1951. प्राणैरपि कृति वृत्तिः Mahāvīraś. 92, 15. सात्त्विकमार्थवृत्तिभिः Spr. (II) 1058. धर्म° (I) 5117. सेवावृत्तिविद् 2799. राग° Rāga-Tar. 4, 27. अद्रोह° 5, 323. लब्धपरिपालन° Spr. (II) 1493. भोजनवृ- त्तिषु (I) 1303. जघन्यगुणवृत्तिस्थ (vgl. जघन्यगुणवृत्तिता MBh. 14, 999) Bhāg. 14, 18. am Ende eines adj. comp.: शतैरुत्पातानिमेववृत्तिभिः Ragh. 3, 43. अशक्यारम्भ° Spr. (II) 713. धैर्य° 1319. मोन° 2247. द्रोह° 2399. Rāga-Tar. 6, 257. कर्णणा° Megh. 91. अनुशंस° R. 2, 21, 58. स्वबाह्वे वः प्रतिकूलवृत्ति- म् Bhāg. P. 3, 16, 6. — 10) sg. und pl. Lebensunterhalt, Erwerb, Gewerbe, Mittel zum Leben AK. 2, 9, 1. 3, 4, 14, 78. Trik. 3, 3, 183. H. 864. fg. an. 2, 198. Mnd. 4. 59. Halāṭj. 2, 415. Vaiś. bei Mallin. zu Çiç. 2, 112. Ein- schiebung nach Nir. 6, 5. Kāṭj. Ça. 20, 2, 14. Lāṭj. 8, 7, 10. M. 1, 113. 3, 286. आत्मनो वृत्तिमन्विच्छन् 4, 252. ज्ञायसी 10, 95. वृत्तिमाकाङ्क्षन् 121. Jāṇ. 2, 48. 284. MBh. 3, 8452. असृजद्वृत्तिमेवाप्ये प्रज्ञानां कृतिकाम्यया 13, 3706. 3710. कर्षकाणां कृषिवृत्तिः पापं विपणिजीविनाम् । गावो ऽस्माकं परा वृत्तिः Hariv. 3809. अन्नार्जनापाया वृत्तयः भैलात्सृष्टयथालब्धाभिधा इति Sarvadarśanas. 75, 18. fg. 74, 14. विपुला Suçr. 2, 395, 12. Kām. Nitis. 2, 19, 21. येन साधारणा वृत्तिः स शत्रुः Spr. 4433. वृत्त्यसराभावात् Kathās. 20, 23. Bhāg. P. 3, 6, 34. 12, 35, 41. वृत्त्यर्थम् M. 2, 141. 5, 22. Spr. 2889. R. Gorr. 2, 32, 22. °हेतोस् M. 4, 11. आत्मवृत्तये Jāṇ. 1, 29. 216. M. 11, 7. दिने दिने स्वर्णशतं दीयते वृत्तये मम Kathās. 53, 83. तस्य वर्षं प्रति वृ- त्तये (so ist zu lesen) कारभमेकं प्रयच्छति Pañāt. 229, 6. भैतेण वृत्तिनो वृत्तिः M. 2, 188. फलैः Spr. 2959. 5374. Çāk. 171. राज्ञो वृत्तिः प्रज्ञागो- रविप्रादा कारादिभिः Bhāg. P. 7, 11, 14. अतो ऽन्यतमया वृत्त्या जीवन् M. 4, 13, 10, 83. Jāṇ. 3, 39. कया वृत्त्या वर्तितं वश्यरद्भिः क्षितिमण्डलम् Bhāg. P. 4, 13, 8. वृत्त्या स्वभावकृतया वर्तमानः 7, 11, 32. प्रद्वृत्त्यापि वर्तयेत् (विश्यः) M. 10, 98. लिङ्गिवेषणा यो वृत्तिमुपजीवति 4, 200. वृत्त्युपजीविन् Mārk. P. 14, 71. मयि पञ्चत्वमापन्ने का वृत्तिं वर्तयिष्यति R. 2, 63, 30. त- त्रवृत्तिं वर्तयेत् Lāṭj. 8, 12, 1. वृत्तिं समाश्रय M. 4, 2. वैश्यवृत्तिमातिष्ठ- न्नाक्षणाः 10, 101. पुरुषो यया वृत्तिं प्रयच्छते Bhāg. P. 3, 6, 21. जघन्यो नातमो वृत्तिमनापदि भवेन्नरः 7, 11, 17. मूलफलैर्वृत्तिं कुरुष्व sein Leben unterhalten —, leben von Spr. 4344. Kathās. 4, 126 (act.). 20, 143. 56, 75. वितवत्सु कृपाणां वृत्तिं वृथा मा कृत्याः Spr. 2386. यथास्य कुरुते वृ- त्तिम् einen Lebensunterhalt gewähren MBh. 13, 3447. केन वृत्तिं कल्प-